(८) आनन्द अवसर आयो...

आनन्द अवसर आयो, मुनिवर दर्शन पायो,
परम दिगम्बर सन्त पधारे, जीवन धन्य बनायो–बनायो।

पुण्य उदय है आज हमारे, नेमीश्वर मुनिराज पधारे;
श्री मुनिवर के दर्शन करके शुद्ध हुए हैं भाव हमारे।
जीवन सफल बनायो... बनायो॥ 1॥

वरदत्त राजा हर्षित भारी आहार दान की है तैयारी;
निराहार चेतन राजा के अनुभव से है आनन्द भारी।
मुनिवर को पड़गाह्यो... पड़गाह्यो॥ 2॥

हे स्वामी तुम यहाँ विराजो उच्चासन पर विराजो;
मन–वच–तन आहारशुद्ध है भाव हमारे अति विशुद्ध हैं।
अपने चरण बढ़ाओ... बढ़ाओ॥ 3॥

दोष छयालिस मुनिवर टालें, अन्तराय बत्तीसों टालें;

दोषरहित निज के अनुभव से चतुरगति का भ्रमण निवारें।
तप को निमित्त बनायो... बनायो ॥ 4 ॥

मुनिवर अब आहार करेंगे, निज चैतन्य विहार करेंगे;
क्षायिक श्रेणी आरोहण कर मुक्तिपुरी को राज वरेंगे।
निज में निज को रमायो...रमायो ॥ 5 ॥